International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-09-2025, Accepted: 23-10-2025, Published: 07-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 70-74

ज्योतिष में नक्षत्रों की अवधारणा

विक्रान्त कौशिक[1], डॉ. भगवानदास जोशी[2]
[1] ज्योतिर्विज्ञान एंव वैदिक कर्मकाण्ड, गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, ज्योतिर्विज्ञान एंव वैदिक कर्मकाण्ड, गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

सारांश
ज्योतिष विद्या को प्राचीन विज्ञान कहा जाता है जोकि आकाशीय पिंडों की स्थिति और उनके प्रभावों का अध्ययन करता है। ज्योतिष विद्या के अनुसार, आकाशीय पिंडों की स्थिति व्यक्ति के जीवन, स्वभाव, और भविष्य पर प्रभाव डालती है ।

ज्योतिष के मुख्य तत्व हैं

1. ग्रह: ज्योतिष में ग्रहों का महत्व बहुत अधिक है। ग्रहों की स्थिति और उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।
2. राशि: ज्योतिष में राशि चक्र का महत्व है, जो 12 राशियों में विभाजित है। प्रत्येक राशि के अपने विशिष्ट गुण और विशेषताएं होती हैं।
3. नक्षत्र: ज्योतिष में नक्षत्रों का महत्व है, जो चंद्रमा की गति के आधार पर 27 भागों में विभाजित है। प्रत्येक नक्षत्र के अपने विशिष्ट गुण और विशेषताएं होती हैं।

ज्योतिष के उपयोग

1. व्यक्तिगत विशेषताओं का विश्लेषण: ज्योतिष का उपयोग व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं, जैसे कि स्वभाव, व्यक्तित्व और जीवन शैली का विश्लेषण करने के लिए किया जा सकता है।
2. भविष्यवाणी: ज्योतिष का उपयोग भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए किया जा सकता है, जैसे कि शुभ और अशुभ समय, अवसर और चुनौतियां।
3. शादी और संबंध: ज्योतिष का उपयोग शादी और संबंधों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है, जैसे कि अनुकूलता और असंगति।
4. करियर और व्यवसाय : ज्योतिष का उपयोग करियर और व्यवसाय के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है, जैसे कि उपयुक्त क्षेत्र और सफलता की संभावनाएं।

ज्योतिष एक जटिल विज्ञान है, और इसके परिणामों को समझने के लिए गहन अध्ययन और ज्ञान की आवश्यकता होती है।

मूल शब्दः ज्योतिष, नक्षत्र, ग्रह, राशि

यथा शिखा मयूराणां नागांना मणयो यथा |
तद्वद् वेदांगशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्ध्नि संस्थितम् ||

वेदांगो में ज्योतिष शास्त्र सबसे ऊपर है, जैसे मयूरो की शिखा शिरोदेश में और नागों की मणियाँ सिरस्थ देश में हैं। ज्योतिष सबसे आखिरी या अंतिम वेदांग है। वेदपुरुष का मुख व्याकरण "ज्योतिषामयनं चक्षु" में ज्योतिष को वेदांग की आँख कहा जाता है। नेत्रों के बिना कोई व्यक्ति अपने पैरों पर चल नहीं सकता उसी तरह, ज्योतिषीय ज्ञान के बिना वेदपुरुष अन्ध हो जाते हैं। "ज्योतिषा सूर्यादिग्रहाणां बोधक शास्त्रम", यानी सूर्य आदि ग्रहों और काल को बताने वाले शास्त्रों, ज्योतिष शास्त्र का मूल है। ज्योतिष वह क्षेत्र है जो ग्रहों, नक्षत्रों और अन्य ग्रहों की गति, दूरी, आदि का पता लगाता है। ज्योतिर्विद्या, सौरमंडल में स्थित ग्रहों और उनके नक्षत्रों के बारे में एक विधिशास्त्र है। वैदिक काल में ज्योतिष को नक्षत्र विद्या कहा जाता था | इस नामकरण का महत्व इसलिए है क्योंकि उस समय नक्षत्रो की गतिविधि का विशेष अध्ययन किया जाता था। छान्दोग्योपनिषद् इसका वर्णन करता है || सौरमंडल में चन्द्रमा जिस मार्ग पर घूमता है, उसे नक्षत्र कहा जाता है। नक्षत्रों को अपनी गति नहीं है। यह भी कहा जाता है: "न क्षरति गच्छति इति नक्षत्रम।" | यहाँ यह भी प्रश्न उठता है कि नक्षत्रों का घटयादिक मान कहाँ से मिलता है जब उनमें गति नहीं है? यहाँ आचार्यों ने प्रवाहवायु को कारण बताया, जो नक्षत्रों को 58 से 67 घटी तक देता है। यह भी नक्षत्रों से संबंधित है। चन्द्रमा २६ दिनों में २७ नक्षत्रों से गुजरता है, और वैदिक काल में एक दैवज्ञ का नाम भी नक्षत्रादर्श बताया गया है, इससे स्पष्ट है कि वेदों में ज्योतिष के बीज होंगे।

अमी य ऋक्षा निहितास उधा नक्रन्दहश्रे कुहचिद्दवेयुः।
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकसश्चन्द्रमा नक्तमेति ॥

इस मन्त्र में दिन में नक्षत्र–प्रकाशाभाव और रात्रि में नक्षत्र–प्रकाशाभाव का वर्णन किया गया है।

वाजनावती सूर्यस्य योषा चित्रा मघा राय ईशे वसूनां।

इस मन्त्र में चित्रा और मघा दोनों का उल्लेख है। यजुर्वेद में २७ नक्षत्रों को गन्धर्व कहा जाता है; इससे लगता है कि उस समय 27 नक्षत्रों का प्रचार हुआ था; किंतु नक्षत्रों की गणना की प्रणाली को समझना कठिन है। अथर्ववेद में कृत्तिकादि में 28 नक्षत्र बताए गए हैं:

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि।
अष्टाविंशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम् ॥
सुहवं मे कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्दा।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे ॥
पुष्यं पूर्वाफाल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वातिः सुखो मे।
अनुराधो विशाखे सुहनानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्टं मूलम् ॥
अन्नं पूर्वा रासन्तां मे आषाढा ऊर्ज ये द्युत्तर आ वहन्तु।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठा कुर्वतां सुपुष्टिम् ॥
आ मे महच्छतभिषग्वरीय आ मे द्वयः प्रोष्ठपदा सुशर्म।
आ रेवती चाश्वयुजौ भगं मे आ मे रयि भरण्य आ वहन्तु ॥

नक्षत्र: कई ताराओ समुदाय को नक्षत्र कहा जाता है। नक्षत्र आकाश में असख्यात तारिकाओं को कहते हैं जो कभी–कभी अश्व, शकट, सर्प या हाथ का आकार लेते हैं। मानव व्यवहार में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी मीलो में नापी जाती है, और आकाश मण्डल में दूरी नक्षत्र से नापी जाती है। तात्पर्य यह है कि अगर कोई पूछे कि एक घटना सड़क पर कहाँ हुई, तो उत्तर होगा कि उस स्थान से इतने कोश या मील चलने पर; अगर कोई पूछे कि एक ग्रह आकाश में कहाँ है, तो उत्तर होगा कि वह नक्षत्र में है। ज्योतिषशास्त्र ने आकाश मण्डल को २७ भागों में बाँटकर प्रत्येक भाग को एक नक्षत्र नाम दिया है। प्रत्येक नक्षत्र को चार भागों में बांटा गया है, जिसे चरण कहते हैं. ये हैं अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आद्र्न, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ |
राशियों का एक समूह है बहुत से तारे सौरमंडल में दिखाई देते हैं | पुराने ज्योतिषज्ञों ने इन तारों के समूह को देखा जो आकाश में एक आकृति बना रहे थे। आचार्यो ने उन आकृतियों को राशि नाम देकर उनका नामकरण किया। राशि 12 है | जैसा कि आप देखते हैं, राशि शब्द का अर्थ धन है। इन बारह राशियों के नाम निम्नलिखित हैं: १२ राशियां हैं: मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धुन, मकर, कुम्भ और मीन। सभी राशियों को अपना व्यक्तित्व मिलता है |

कल्प , सूत्र निरुक्त और व्याकरण में ज्योतिष

ज्योतिष को आश्वलायन, पारस्कर, हिरण्यकेशी और आपस्तम्ब सूत्रों में बताया गया है। "श्रावण्यां पौर्णमास्यां श्रावणकर्मा" और "सीमन्तोन्नयन यदा पुसा नक्षत्रेण चन्द्रमा युक्त: स्यत" आश्वलायन सूत्र में कई वाक्य मिलते हैं। पारस्कर सूत्र में शादी के नक्षत्रों का उल्लेख है: "त्रिषु त्रिषु उत्तरादिपु स्वातौ मृगशिरसि रोहिण्या।" यही कारण है कि उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, उत्तराषाढा, श्रवण, घनिष्ठ, उत्तराभाद्रपद, रेवती और अश्विनी विवाह के नक्षत्र हैं। इन लेखों में विभिन्न कार्यों के विधेय नियम बताए गए हैं बौधायन सूत्र में "मीनमेषयोर्मेषवृषमयोर्वसन्त" कहा गया है। निरुक्त में दिन और रात्रि, शुल्क और कृष्ण पक्ष और उत्तरायण और दक्षिणायन का चमत्कारिक वर्णन है। यह पूर्व मध्यकालीन ज्योतिष ग्रंथों की तरह सुंदर है।

वेदों में ज्योतिष प्रमाण

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु।।

(अथर्व. 19/9/1)
जिन नक्षत्रों को चंद्रमा चलाने में सक्षम है, वे सभी मेरे लिए आकाश, अन्तरिक्ष, जल, पृथ्वी, पर्वतों और हर दिशा में शुभ हों।

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे।
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु।।

मुझे अठाईस नक्षत्र सब कुछ दें जो शुभ और कल्याणकारी है। मैं प्राप्त करने और बचाने की क्षमता दें। दूसरे शब्दों में, पाने की क्षमता के साथ–साथ रक्षा की क्षमता भी मिलेगी। दोनों अहोरात्र (दिवा और रात्रि) को नमस्कार।
इस अहोरात्र को पाराशर जी ने कहा—

अहोरात्राद्यंतलोपाद्धोरेति प्रोच्यते बुधै:।
तस्य हि ज्ञानमात्रेण जातकर्मफलं वदेत्।।

(बृ. पा. हो. शा. अध्याय 3/2)
होरा शब्द अहोरात्र पद के आदि (अ) और अंतिम (त्र) वर्णों से बना है। इस होरा (लग्न) का ज्ञान ही जातक का शुभ कर्मफल बताता है।

तेज: पुज्जा नु वीक्ष्यन्ते गगने रजनीषु ये।
नक्षत्रसंज्ञकास्ते तु न क्षरन्तीति निश्चला:।।
विपुलाकारवन्तोऽन्ये गतिमन्तो ग्रहा: किल।
स्वगत्या भानि गृह्वन्ति यतोऽतस्ते ग्रहाभिधा:।।

(बृ. पा. हो. शा. अ. 3/5–8)
रात में आकाश में जो तेज: पुंज दिखते हैं, वे ही तारागण नहीं चलने के कारण नक्षत्र कहे जाते हैं। कुछ अन्य विशाल आकार वाले गतिशील ग्रह भी तेज हैं, क्योंकि पुंज अपनी गति से निश्चित नक्षत्रों को पकड़ लेते हैं, इसलिए वे ग्रह कलाते हैं।
ऊपर दिए गए तीन मंत्रों में नक्षत्रों से सुख, सुमति, योग और क्षेम की मांग की गई। अब ग्रहों से दो मंत्रों में इसी तरह की प्रार्थना का वर्णन है। दोनों मंत्र अथर्ववेद के उन्नीसवें काण्ड के नवम सूक्त में हैं। इस सूक्त का सातवां मंत्र "शं नो दिविचरा ग्रहा" है, जो कहता है कि आकाश में घूमने वाले सभी ग्रह हमारे लिए शांत हों। यह प्रार्थना सभी के लिए है।

श नो ग्रहाश्चान्द्रमसा: शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतु: शं रुद्रास्तिग्मतेजस:।।

चंद्रमा की तरह हर ग्रह हमारे लिए शांत होना चाहिए। सूर्य भी शांतिदायक होता है। मौत, धूम और केतु भी शांत करते हैं। तीक्ष्ण तेजस्वी रुद्र भी शांत करते हैं। अब सवाल उठता है कि चंद्र से मिलकर चलने वाले अन्य ग्रह कौन हैं? जवाब एक ही है: मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि, चंद्र के समान सूर्य की परिक्रमा करने वाले पाँच ताराग्रह एक ही श्रेणी में आते हैं। सूर्य किसी को नहीं घूमता। इसलिए इसे अलग श्रेणी में स्थान दिया गया है। ज्योतिष में, राहु और केतु को छायाग्रह कहा जाता है क्योंकि वे दिखने वाले ग्रह नहीं हैं. हालांकि, वेदों ने इन्हें ग्रहों की श्रेणी में ही रखा है। चंद्रमा की तरह हर ग्रह हमारे लिए शांत होना चाहिए। सूर्य भी शांतिदायक होता है। मौत, धूम और केतु भी शांत करते हैं। तीक्ष्ण तेजस्वी रुद्र भी शांत करते हैं। ज्योतिष में नवग्रहों को सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु कहते हैं। चंद्रमा के ग्रह को कुछ भाष्यकारों ने चान्द्रमसा: कहा है और उसमें नक्षत्रों (कृत्तिका आदि) की गणना की है, लेकिन यह तर्कसंगत नहीं लगता। महर्षि पराशर ने इस मंत्र में मृत्यु और धूम को अप्रकाश ग्रह कहा है। ये पापकारी ग्रह हैं और बुरा प्रभाव देते हैं। कुछ लोग गुलिक को मृत्यु कहते हैं। उपर्युक्त मंत्र में उनकी प्रार्थना से स्पष्ट है कि वे भी लोगों पर असर डालते हैं।

श्री पाराशरजी कहते हैं: पितामह ब्रह्माजी ने वेदों से लेकर ज्योतिष शास्त्र के बारे में बहुत कुछ बताया है ?।

वेदेभ्यश्च समुद्धृत्य ब्रह्मा प्रोवाच विस्तृतम्।

(बृ. पा. हो. सारांश उत्तराखण्ड अध्याय 20/3)
बौधायन–गृह्य शेष सूत्र' (3/10/1) – के विनायक कल्प में लिखा है –
मासि मासि चतुर्थ्यां शुक्लपक्षस्य पच्चम्यां वा अभ्युदयादौ सिद्धिकाम ऋषिकाम: पशुकामों वा भगवतो विनायकस्य बलिं हरेत्।
चंद्रमा की तरह हर ग्रह हमारे लिए शांत होना चाहिए। सूर्य भी शांतिदायक होता है। मौत, धूम और केतु भी शांत करते हैं।

तीक्ष्ण तेजस्वी रुद्र भी शांत करते हैं। प्रत्येक महीने की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी या पंचमी तिथि को सिद्धि, ऋद्धि और पशु–कामना वाला भगवान् विनायक (गणेश) के लिए बलि (मोदकादि नैवेद्य) दें। (अथर्ववेदीय पैप्पलाद शाखा के इस दीर्घायुष्य सूक्त से)

सं मा सिच्चन्तु मरुत: सं पूषा सं बृहस्पति।
सं मायमग्नि सिच्चन्तु प्रजया च धनेन च।।

मरुद्गण, पूषा, बृहस्पति तथा यह अग्नि मुझे प्रजा एंव धन से सीचें तथा मेरी आयु की वृद्धि करें।

(दीर्घा–सूक्त)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

ईश्वर बहुत शक्तिशाली है, पूषा सर्वज्ञ है, गरुड बुराई दूर करता है और बृहस्पति भी सबका कल्याण करता है।

वेदों में नक्षत्र

अब ऋग्वेद संहिता से कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं जो आकाश में इतस्ततः फैले हुए तारों का वर्णन करते हैं, न कि एक विशेष नक्षत्र का अथर्वसंहिता में इनमें से कुछ मंत्र भी हैं। निम्नलिखित मन्त्र कहता है कि विश्वदर्शी सूर्य के आते ही नक्षत्र और रात्रि की तरह भाग जाती है।

अप त्ये तावयो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभि:।
सूराय विश्वचक्षसे।।

(ऋ० सं० १।५०।२),
अथ० सं० १३।२।१७, २०।४७।१४

अभि श्यावं न कृशनेमिरश्वं नक्षत्रेभि: पितरो द्यामपिशन्।।

(ऋ० सं० १०/६८।११)

इन दो मंत्रों में तारों को "नक्षत्र" कहा जाता है। "द्यौरिव स्मयमानो नभोभि:" मंत्र में तारका अर्थ में नभः शब्द का प्रयोग किया गया है। तारका शब्द कहीं–कहीं आया है। "द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त (ऋ० सं० २.३४.२)" और "ऋतावानं विचेतसं पश्यन्तो द्यामिव स्तृभिः (ऋ० सं० ४.७.३)" दोनों मंत्रों में स्तु शब्द का प्रयोग तारा के लिए हुआ है। पहली दो ऋचाओं में नक्षत्र शब्द सभी तारों को शामिल करता है, न केवल चन्द्र मार्ग में आने वाले नक्षत्रों को। वेदोत्तरकालीन संस्कृत ग्रन्थों में नक्षत्र शब्द चन्द्रमार्ग में आने वाले तारों के साथ–साथ सभी तारों के लिए भी प्रयोग किया गया है।

अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः।।

ऋ० सं० १०/८५/१२ , अथ० सं० १४।१।२

ऋक्संहिता में चन्द्रमार्ग के सत्ताईसों में ही नक्षत्र शब्द पाया गया है, जिसका नाम सोम है। नक्षत्रों के लिए ही आया है। नक्षत्रों के नाम नहीं, बल्कि कुछ के नाम हैं। 5.55,13 और 10.64:8 में तिष्य शब्द है। वह पुष्यनक्षत्र बोलेगा। 4.502. चित्रा नक्षत्र है। 4.5.1.147 में रेवती शब्द है। वह रेवती नक्षत्र से आया है। अग्रिम ऋचा में दो नक्षत्र होते हैं।

सूर्याया वहतुः प्रागात् सवितायमवासृजत्
अद्यामु हन्यन्ते गावोर्जुन्योः पर्युह्यते।।

ऋ० सं० १०/८५।१३

दहेज, जो सबिता ने दिया था, सूर्यास्त से पहले ही आगे गया था। गाय घा (मघा) नक्षत्र में मार दी जाती है। कन्या को अर्जुनी (फल्गुनी) नक्षत्र में ले जाते हैं। सूर्या सोम को सविता की कन्या दी गई। यह कथा इसलिए कही गयी है कि सूर्य ने दहेज में जो गायें दीं, वे मघा नक्षत्र में ही हाँक कर ले जायीं, और कन्या अर्जुनी नक्षत्र में गयीं। यहां फाल्गुनी को अर्जुनी और मघा को अधा कहा गया है। वेदोत्तरकालीन ज्योतिष ग्रन्थों में ये शब्द दुर्लभ हैं, लेकिन वे उन नक्षत्रों का संकेत देते हैं। इसमें कोई शक नहीं है क्योंकि अथर्वसंहिता (14.1.13) में इसी ऋचा में मधा और फाल्गुनी ही शब्द हैं।

सूर्याया वहतुः प्रागात् सवितायमवासृजत्।
मघासु हन्यन्ते गावः फल्गुनीषु व्युह्यते।।
एता वा इन्द्रनक्षत्रं यत्फल्गुन्योप्यस्य प्रतिनाम्न्मोर्जुनो हवै
नामेन्द्रो यदस्य गुह्यं नामार्जुन्यो वै नामैनास्ताः।।

शत० ग्रा० २।१।२।११

इससे भी अर्जुनी का मतलब फल्गुनी है। यजुर्वेद में मघासु स्त्रीलिंग बहुवचन है, जबकि फल्गुन्योः स्त्रीलिंग द्विवचन है। यहाँ भी फल्गुन्योः और आधासु का प्रयोग उसी प्रकार है । इनमें मघा और फाल्गुनी नक्षत्रों के क्रमानुसार होनेवाली दो क्रियाएं बताई गई हैं। यहां अघासु और फल्गुन्योः शब्दों के वचन, लिङ्ग और क्रम तैत्तिरीयवेद और वेदोत्तरकालीन योतिषग्रन्थोक्त नक्षत्रों के अनुसार हैं, इससे पता चलता है कि यजुर्वेद की नक्षत्रपद्धति ऋग्वेदकाल में पूरी तरह से प्रचलित थी। ऋक्संहिता (७.५.२५) में चन्द्रमार्गान्तर्गत और उनसे अलग तारों के लिए एक ही शब्द है, लेकिन तैत्तिरीयसंहिता में एक जगह दोनों को अलग–अलग बताया गया है। मध्य अश्व का कहना है—

यो वा अश्वस्य मेध्यस्य शिरो वेद शीर्षण्वान्मेध्यो भवत्युषा वा अश्वस्य मेध्यस्य शिरः सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणश्चन्द्रमाः श्रोत्रं दिशः पादा अवान्तरदिशः पर्शवोऽहोरात्रे निमेषोर्धमासाः पर्वाणि मासाः सन्धानान्युतवोंऽगानि संवत्सर आत्मा रश्मयः केशा नक्षत्राणि रूपं तारका अस्थीनि नभो मा सानि...।।

शीर्षण्वान् और पवित्र होता है जो मेध्य अश्व का गिर जानता है। मेध्य अश्व का शिर उषा है। सूर्य चक्षु, वात प्राण, चन्द्रमा कर्ण, दिशाएं पैर, अवान्तर दिशाएं पर्श, अहोरात्र निमेष, अर्थमाम पर्व, मास सन्धान, ऋतु अङ्ग, संवत्सर आत्मा। तारे, रश्मि, कश और नक्षत्र रूप अस्थियां हैं। तैत्तिरीय श्रुति में नक्षत्रों के बारे में बहुत कुछ बताया गया है। कहीं सभी नक्षत्रों के नाम और उनके देवता पढ़े गए हैं, कहीं उनके बारे में कई अलग–अलग वर्णन हैं, कहीं उनके नामों की उत्पत्ति बताई गई है और कहीं कुछ बीच के ही नक्षत्रों के नाम अनुचित रूप से लिए गए हैं। तैत्तिरीयसंहिता का निम्नलिखित अनुवाक सभी नक्षत्रों से बना है।

कृत्तिकानक्षत्रमग्निर्देवताग्नेरुचम्थ प्रजापतेर्धातुः सोमम्यर्चे त्वा रुचे त्वा भासे त्वा ज्योतिषे त्वा रोहिणी नक्षत्रं प्रजापतिर्देवता मृगशीर्ष नक्षत्र सोमों देवतार्द्रान– क्षत्र रुद्रो देवता पुनर्वसूनक्षत्रमदितिर्देवता तिप्यो नक्षत्रं बृहस्पतिर्देवताश्रेषा नक्षत्र यर्पा देवता मघा नक्षत्रं पितरो देवना फल्गुनी नक्षत्रमर्यमा देवता फल्गुनी नक्षत्रं भगो देवता हस्तो नक्षत्र सविता देवता चित्रानक्षत्रमिन्द्रो देवता स्वाती नक्षत्रं वायुर्देवता विशाखे नक्षत्रमिन्द्राग्नीदेवतानुराधा नक्षत्रं मित्रो देवता रोहिणी नक्षत्रमिन्द्रो देवता विचृतौ नक्षत्रं पितरो देवताषाढ़ानक्षत्रमापो देवताषाढ़ा नक्षत्रं विश्वेदेवा देवता श्रोणा नक्षत्रं विष्णुदेवता श्रविष्ठा नक्षत्रं वसवो देवता दातभिषङ्नक्षत्रमिन्द्रो देवता प्रोष्ठपदानक्षत्रमजाएकपाद्देवता

प्रोष्ठपदा नक्षत्र– महिर्बुध्नियो देवता रेवती नक्षत्रं पूषा देवताऽश्वयुजौ नक्षत्रमश्विनौ देवतापभरणीर्नक्षत्रं यमो देवता पूर्णापञ्चाद्यते देवा अदधुः।।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन स्थानों पर सभी नक्षत्रों और उनके देवताओं के नाम पढ़े जाते हैं। हम यहां उनमें से पहले अनुवाक को उद्धृत करते हैं क्योंकि यह बहुत दिलचस्प है।

अग्नेः कृत्तिकाः। शुक्र परस्ताज्ज्योतिरवस्तात्। प्रजापते रोहिणी। आपः परस्तादोषधयोवस्तात्। सोमस्येन्वका विततानि। परस्तात् वयन्तोवस्तात्। रुद्रस्य बाहू। मृगयवः परस्ताद्विक्षारोऽवस्तात्। आदित्यै पुनर्वसू। वातः पर– दार्द्रमवस्तात्। बृहस्पतेस्तिष्यः। जुह्वतः परस्ताद्यजमाना अवस्तात्। सर्पाणामा– श्रेषाः। अभ्यागछन्तः परस्ताद्भ्यानृत्यन्तोवस्तात्। पितृणां मधाः। रुदन्तः परस्तादपभ्रंशोवस्ताt। अर्यम्णः पूर्वेफल्गुनी। जाया परस्तादृषभोवस्तात्। भगस्योत्तरे। वहतवः परस्ताद्वहमाना अवस्तात्। देवस्य सवितुर्हस्तः । प्रसवः परस्तात्मनिरवस्तात्। इन्द्रस्य चित्रा। ऋतं परस्तात्सत्यमवस्तात्। वायोनिष्ट्या ग्रनतिः। परस्तादसिद्धिरवस्तात्। इन्द्राग्नियोविशाखे। युगानि परस्तात् कृषमाणा अवस्तात्। मित्रस्यानूराधाः। अभ्यारोहत्परस्तादभ्यारूढमवस्तात्। इन्द्रस्य रोहिणी। श्रृणत्परस्तात्प्रतिश्रृणदवस्तात्। निर्ऋत्यै मूलबर्हणी।

प्रति–
भञ्जन्तः परस्तात्प्रतिश्टणन्तोवस्तात्। अपां पूर्व अषाढ़ाः। वर्चः परस्ता– त्समितिरवस्तात्। विश्वेषां देवानामुत्तराः। अभिजयत्परस्तादभिजितमवस्तात। विष्णोः श्रोणा। पृच्छमानाः परस्तात्पन्था अवस्तात्। बसूना श्रविष्ठाः। भतं परस्ताद्भूतिरवस्तात्। इन्द्रस्य शनभिषक। विश्वव्यचाः परस्ताद्विश्वक्षितिरव– स्तात्। अजस्यैकपदः पूर्व प्रोष्ठपदाः। वैश्वानरं परस्ताद्वैश्वावसवमवस्तात्। अहेर्बुध्नियस्योत्तरे। अभिषिञ्चन्तः परस्तादिभशृण्वन्तोवस्तात्। पूष्णो रेवती गावः परस्तात् वत्सा अवस्तात्। अश्विनोरश्वयुजौ। ग्रामः परस्तात्सेनाष स्तात्। यमस्यापभरणीः। अपकर्षन्नः परस्तादपवहन्तोवस्तात्। पूर्णा पश्चाद्यते देवा अदषुः।।

तै०ब्रा० १।५।१

यहां प्रत्येक नक्षत्र को "अग्नि की कृत्तिकाएँ, शुक्र उस ओर और ज्योति इस ओर" बताया गया है। यह कहने का उद्देश्य और उसकी उत्पत्ति पूरी तरह से समझ में नहीं आता कि इस ओर अमुक और उस ओर अमुक है। ज्ञात है कि नक्षत्र के शुभ फल और आकृति के बारे में कुछ कहा गया है। फल्गुनी से संबंधित उपर्युक्त ऋग्वेद की ऋचा और यहाँ के वाक्यों में काफी समानता है। एक वाण्य (मैत्रेण कृषन्ते) में कहा गया है कि अनुराधा नक्षत्र में हल चलाते हैं। अनुराधा के पूर्व नक्षत्र विशाखा में कहा गया है कि युग (हलों की जोड़ियां) इस ओर और कृषमाणा (हल जोतने वाले) उस ओर हैं। इस कथन में अनु–राधा में हल चलाने का कुछ कारण है। युग और कृषमाण की आकृति में एक स्पष्ट संबंध है।

तैत्तिरीयब्राह्मण में तृतीयाष्टक के प्रपाठक 1 के अनुवाक 1 और 2 में सभी नक्षत्रों, उनके देवताओं और उनके बारे में कुछ रोचक और चमत्कारिक वर्णन हैं। उसमें स्पष्ट रूप से नहीं लिखा है कि किस नक्षत्र की कोई देवता है, लेकिन वाक्यांश "अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः, आर्द्रया रुद्रः प्रथमान एति" एक तरह से नक्षत्रों और उनके देवताओं को पढ़ाया जाता है। उस शिक्षक के चारों और पांचों अनुवाकों में भी देवताओं और नक्षत्रों के नाम हैं। ये दोनों भी काफी व्यापक हैं। यह एक नक्षत्र के वाक्य को उद्धृत करता है। अन्य नक्षत्रों में भी प्रायः इसी तरह के वाक्य हैं।

बृहस्पतिर्वा अकामयन। ब्रह्मवर्चसी स्यामिति। स एतं बृहस्पतये तिष्याय नैवारं चरु पयसि निरवपत्। ततो वै स ब्रह्मवर्चस्य भवत्। ब्रह्मवर्चसी ह वै भवति। य एतेन हविषा यजते। य उ चौनदेवं वेद। सोत्र जुहोति। बृहस्पतये म्वाहा तिष्याय स्वाहा। ब्रह्मवर्चसाय स्वाहेति।।

तै०ब्रा० ३।१।४।६

बृहस्पति से ब्रह्मवर्चसी बनने की इच्छा व्यक्त की। उसने पय में बृहस्पति और तृष्य को नीवार का चरु दिया। इसलिए वह ब्रह्मवर्चसी बन गया। जो इस हवि से यज्ञ करता है, वह ब्रह्मवर्चसी है। वह हवन इस तरह करता है: बृहस्पतये स्वाहा, तिष्याय स्वाहा, ब्रह्मवर्चसाय स्वाहा।

क्रमांक	नक्षत्र नाम	देवता	लिंग	वचन
१	कृत्तिका	अग्नि	स्त्री	बहु०
२	रोहिणी	प्रजापति	स्त्री	एकवचन
३	मृगशीर्ष	सोम	नपुसंक	एकवचन
४	आर्द्र्न	रूद्र	स्त्री	एकवचन
५	पुनर्वसु	अदिति	पुरुष	द्विवचन
६	पुष्य	बृहस्पति	पुरुष	एकवचन
७	आश्लेषा	सर्प	स्त्री	बहुवचन
८	मघा	पितर	स्त्री	बहुवचन
९	पूर्वाफाल्गुनी	भग	स्त्री	द्विवचन
१०	उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	स्त्री	द्विवचन
११	हस्त	सूर्य	पुरुष	एकवचन
१२	चित्रा	विश्वकर्मा	स्त्री	एकवचन
१३	स्वाति	वायु	स्त्री	एकवचन
१४	विशाखा	इन्द्राग्नि	स्त्री	द्विवचन
१५	अनुराधा	मित्र	स्त्री	बहुवचन
१६	ज्येष्ठा	इन्द्र	स्त्री	
१७	मूल	निर्ऋति	नपुसंक	एकवचन
१८	पूर्वाषाढ़ा	जल	स्त्री	बहुवचन
१९	उत्तराषाढा	विश्वदेव	स्त्री	बहुवचन
२०	श्रवण	विष्णु	स्त्री	एकवचन
२१	धनिष्ठा	वसु	स्त्री	बहुवचन
२२	शतभिषा	वरुण	पुरुष	एकवचन
२३	पूर्वाभाद्रपद	अज एकपाद	पुरुष	बहुवचन
२४	उत्तराभाद्रपद	विष्णु	पुरुष	बहुवचन
२५	रेवती	पूषा	स्त्री	एकवचन
२६	भरणी	यम	स्त्री	बहुवचन
२७	अश्विनी	अश्विनी	पुरुष	
२८				

शुभाशुभ नक्षत्र: नक्षत्रों में कुछ नक्षत्र शुभ और कुछ नक्षत्र अशुभ होते है |

शुभ नक्षत्र है: रोहिणी , स्वाति , मघा , उत्तराफाल्गुनी , हस्त , अनुराधा , मूल , उत्तराषाढा , उत्तराभाद्रपद , रेवती ये नक्षत्र विवाह एवं खेती गृह प्रवेश और वस्तु संग्रह अदि के लिए शुभ होते है |

अशुभ नक्षत्र: भरणी , कृत्तिका , आश्लेषा ये नक्षत्र उग्र है |

मध्यम नक्षत्र: आर्द्र्न , ज्येष्ठा , पूर्वाफाल्गुनी , पूर्वाषाढ़ा , पूर्वाभाद्रपद, विशाखा और शतभिषा ये नक्षत्र साधारण समझे जाते है |

अशुभ नक्षत्र में कोई भी शुभ कार्य नही करना चाहिए |

चर व स्थिर नक्षत्र

स्थिर नक्षत्र: रोहिणी , उत्तराफाल्गुनी , उत्तराषाढा , उत्तराभाद्रपद | इन चर नक्षत्रों में देवालय वा मकान बनाना , बाग लगाना , राज्यभिषेक के लिए शुभ समझे जाते है |

चर नक्षत्र: पुनर्वसु , श्रवण ,घनिष्ठा , स्वाति , शतभिषा विहार करने के लिए शुभ माने जाते है |
मृदु नक्षत्र: मृगशिरा , चित्रा , अनुराधा , रेवती | ये वस्त्रलंकार , मित्र कार्य , क्रीड़ा आदि के लिए शुभ समझे जाते है |
लघु नक्षत्र: अश्विनी , पुष्य , हस्त | ये तंत्र–मन्त्र सीखने , लेन – देन आदि निकालने के लिये शुभ होते है |
क्रूर नक्षत्र: भरणी , चित्रा , पूर्वाफाल्गुनी , पूर्वाषाढ़ा , पूर्वाभाद्रपद | ये क्रूर कार्य के लिये उचित समझे जाते है |
मित्र नक्षत्र: विशाखा , कृत्तिका | ये अग्निहोत्र , वृषोत्सर्ग के लिए उत्तम है |

नक्षत्रों के मुख

ऊर्ध्वमुख नक्षत्र: रोहिणी, पुष्य, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद। देवालय व घर बनाने के लिये उत्तम माने गये हैं।

अधोमुख नक्षत्र: भरणो, कृत्तिका, विशाखा,आश्लेषा, मूल, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद। तालाब, कुंआ, तलघर बनाने के लिये उत्तम हैं।

तिर्यङ्मुख नक्षत्र: आश्विनी, मृग, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, रेवतो। गाड़ी–घोड़ा चलाना, नौका चलाने के लिये उत्तम हैं।

गंड मूल नक्षत्र: २७ नक्षत्रों में से जब चन्द्रमा का गोचरीय संरक्षण छ: नक्षत्रों आश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल तथा रेवती नक्षत्र पर होता है तब इन नक्षत्रों को गंड मूल नक्षत्र कहा जता है |

पंचक: २७ नक्षत्रों में से ५ पंचक होते जो निम्न प्रकार है | घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद , और रेवती |

निष्कर्ष

नक्षत्र ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और प्रत्येक नक्षत्र का अपना एक विशेष महत्व और ऊर्जा होती है। नक्षत्रों का उपयोग ज्योतिष में व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति को निर्धारित करने और उसके जीवन पर उनके प्रभाव को समझने के लिए किया जाता है। नक्षत्रों के ज्ञान से हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. शास्त्री, नेमीचन्द्र, भारतीय ज्योतिष का इतिहास ,
2. अथर्ववेद का मन्त्र
3. ऋग्वेदसंहिता ७.७.५
4. अथर्ववेदः / काण्डं–१६ / सूक्तम–०७
5. भारतीय ज्योतिष मराठी पुस्तक का अनुवाद लेखक श्री शिवनाथ भक्तारखण्डी
6. अथर्वसंहिता 19 / 9 / 1 , 19 / 9 / 2
7. https: / / vedicscripture. com / bhashya / 23 / tharvaveda / 19 / 8 / 0 / 2
8. बृहत् पाराशर होरा शास्त्रम् अध्याय 3 / 2
9. बृहत् पाराशर होरा शास्त्रम् अध्याय 3 / 5–8
10. बृहत् पाराशर होरा सारांश उत्तराखण्ड अध्याय 20 / 3
11. https: / / veerchhattisgarh-in / ?p=16260 /
12. सामवेद, 21 / 3 / 9
13. ऋग्वेदसंहिता १।५०।२
14. अथर्वसंहिता १३।२।१७ , २०।४७।१४
15. ऋग्वेदसंहिता १० / ६८।११
16. ऋग्वेदसंहिता २।३४।२
17. ऋग्वेदसंहिता ४।७।३
18. ऋग्वेदसंहिता १० / ८५।१३
19. शतपथब्राह्मण २।१।२।११
20. श्री शिवनाथ भक्तारखण्डी ,भारतीय ज्योतिष मराठी पुस्तक का अनुवाद
21. भारतीय ज्योतिष मराठी पुस्तक का अनुवाद लेखक श्री शिवनाथ भक्तारखण्डी
22. मराठी पुस्तक का अनुवाद भारतीय ज्योतिष लेखक श्री शिवनाथ भक्तारखण्डी
23. भारतीय ज्योतिष मराठी पुस्तक का अनुवाद लेखक श्री शिवनाथ भक्तारखण्डी
24. सुलभ ज्योतिष ज्ञान लेखक वासुदेव सदाशिव खानखोजे प्रकाशक चौखम्बा विद्याभवन , वाराणसी